

छत्तीसगढ़ के महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की भूमिका: विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास का एक अध्ययन

डॉ. चन्द्रसेन जांगड़े

सहायक प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, डॉ. सी. व्ही. रामन विश्वविद्यालय,
करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

Gmail. drchandrasenjanqde@gmail.com

सारांश

वर्तमान सूचना एवं डिजिटल युग में विद्यार्थियों के सामने उपलब्ध सूचना की मात्रा निरंतर बढ़ रही है। इंटरनेट, ई-पुस्तक, ई-जर्नल, ऑनलाइन डेटाबेस, सोशल मीडिया तथा विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से बड़ी मात्रा में सूचना उपलब्ध है। ऐसी स्थिति में केवल सूचना तक पहुँच प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि सही सूचना की पहचान, खोज, मूल्यांकन, चयन, उपयोग तथा उचित संदर्भ प्रदान करने की क्षमता भी आवश्यक है। इसी क्षमता को सूचना साक्षरता कहा जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में संचालित सूचना साक्षरता गतिविधियों की स्थिति, विद्यार्थियों की सूचना साक्षरता के स्तर, पुस्तकालय द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रशिक्षण तथा इन कार्यक्रमों के विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्य पर प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। नमूना अध्ययन में 20 महाविद्यालयों तथा 200 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। अध्ययन के नमूना आँकड़ों से संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों में इंटरनेट एवं डिजिटल संसाधनों के उपयोग की क्षमता अपेक्षाकृत अच्छी है, लेकिन विश्वसनीय स्रोत की पहचान, शोध डेटाबेस का उपयोग, संदर्भ प्रबंधन तथा सूचना के आलोचनात्मक मूल्यांकन में अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता है। सूचना साक्षरता कार्यक्रमों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का शैक्षणिक कार्य, सूचना खोजने की क्षमता और डिजिटल संसाधनों के प्रभावी उपयोग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

मुख्य शब्द: सूचना साक्षरता, महाविद्यालयीन पुस्तकालय, डिजिटल साक्षरता, सूचना खोज, ई-संसाधन, विद्यार्थी, छत्तीसगढ़।

1. प्रस्तावना

पुस्तकालय उच्च शिक्षा संस्थानों की शैक्षणिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। पारंपरिक रूप से पुस्तकालय का मुख्य कार्य पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं अन्य दस्तावेजों का संग्रह एवं उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराना रहा है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ पुस्तकालयों की भूमिका में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आज विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के डिजिटल संसाधनों का उपयोग करते हैं। उन्हें एक ही विषय पर अनेक वेबसाइट, शोध-पत्र, ई-पुस्तकें, वीडियो, ब्लॉग और सोशल मीडिया सामग्री प्राप्त हो सकती है। ऐसी स्थिति में यह पहचानना आवश्यक हो जाता है कि कौन-सी सूचना विश्वसनीय, प्रामाणिक और शैक्षणिक दृष्टि से उपयोगी है। सूचना साक्षरता विद्यार्थियों को सूचना की आवश्यकता पहचानने, उपयुक्त स्रोत खोजने, प्राप्त सूचना का मूल्यांकन करने तथा उसका नैतिक एवं प्रभावी उपयोग करने में सक्षम बनाती है। हाल के शोधों में भी यह पाया गया है कि महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को केवल सूचना तक पहुँच ही नहीं, बल्कि

स्रोत-मूल्यांकन और Scholarly Communication जैसे कौशलों में निरंतर सहायता की आवश्यकता रहती है। छत्तीसगढ़ के महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में भी डिजिटल संसाधनों का उपयोग बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए, बिलासपुर स्थित एक शासकीय महाविद्यालय के पुस्तकालय संबंधी उपलब्ध विवरण में कंप्यूटरीकरण तथा SOUL सॉफ्टवेयर के उपयोग का उल्लेख मिलता है। इस परिस्थिति में महाविद्यालयीन पुस्तकालयों द्वारा सूचना साक्षरता कार्यक्रम आयोजित करना विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि

सूचना साक्षरता की आवश्यकता केवल पुस्तकालय उपयोग तक सीमित नहीं है। यह विद्यार्थियों के अध्ययन, असाइनमेंट, परियोजना कार्य, प्रतियोगी परीक्षाओं और अनुसंधान गतिविधियों से भी संबंधित है। भारत में सूचना साक्षरता को उच्च शिक्षा में शामिल करने तथा विद्यार्थियों को सूचना स्रोतों की पहचान, मूल्यांकन एवं उपयोग का प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पर लंबे समय से बल दिया जाता रहा है। 2024 के एक भारतीय अध्ययन में विश्वविद्यालय के घटक महाविद्यालयों के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के डिजिटल सूचना साक्षरता कौशल का अध्ययन किया गया। अध्ययन में डिजिटल सूचना संसाधनों के उपयोग के साथ-साथ कम बैंडविड्थ, सुरक्षा, गोपनीयता और तकनीकी समस्याओं जैसी चुनौतियाँ भी सामने आईं। इसी प्रकार 2024 में प्रकाशित एक अध्ययन ने अकादमिक पुस्तकालयों के सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन किया और प्रशिक्षण तथा उपयोगकर्ता सहभागिता के महत्व पर बल दिया। इस पृष्ठभूमि में छत्तीसगढ़ के महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों का अध्ययन एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र है।

3. समस्या का प्रतिपादन

छत्तीसगढ़ के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को विभिन्न डिजिटल एवं मुद्रित सूचना स्रोतों तक पहुँच प्राप्त है, लेकिन सभी विद्यार्थी इन स्रोतों की पहचान, मूल्यांकन एवं उचित उपयोग में समान रूप से सक्षम हों, यह आवश्यक नहीं है। अतः अध्ययन की समस्या निम्न प्रकार निर्धारित की गई है—
“छत्तीसगढ़ के चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की स्थिति क्या है तथा इन कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं सूचना उपयोग कौशल पर क्या प्रभाव पड़ता है?”

4. अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. छत्तीसगढ़ के चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की स्थिति का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के सूचना साक्षरता स्तर का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सूचना स्रोतों की पहचान करना।
4. विद्यार्थियों की सूचना खोज तकनीकों का अध्ययन करना।
5. विद्यार्थियों की सूचना स्रोतों के मूल्यांकन की क्षमता का अध्ययन करना।
6. पुस्तकालय द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की स्थिति का अध्ययन करना।
7. सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना।
8. सूचना साक्षरता प्रशिक्षण का विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्य पर प्रभाव जानना।
9. सूचना साक्षरता में आने वाली प्रमुख समस्याओं की पहचान करना।

10. महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को मजबूत करने हेतु सुझाव देना।

5. अनुसंधान प्रश्न

1. क्या चयनित महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं?
2. विद्यार्थियों को इन कार्यक्रमों की कितनी जानकारी है?
3. विद्यार्थी सूचना प्राप्त करने के लिए किन स्रोतों का उपयोग करते हैं?
4. क्या विद्यार्थी प्राप्त सूचना की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करते हैं?
5. क्या सूचना साक्षरता प्रशिक्षण विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्य में सहायक है?
6. विद्यार्थियों को सूचना खोज में किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
7. पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को किस प्रकार बेहतर बनाया जा सकता है?

6. परिकल्पनाएँ

1. सूचना साक्षरता कार्यक्रमों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की सूचना खोज क्षमता अधिक प्रभावी होती है।
2. सूचना साक्षरता प्रशिक्षण और विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में सकारात्मक संबंध है।
3. डिजिटल सूचना संसाधनों का नियमित उपयोग करने वाले विद्यार्थियों में सूचना मूल्यांकन क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है।
4. पुस्तकालय द्वारा नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में ई-संसाधनों के उपयोग की दक्षता अधिक होती है।
5. सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की उपलब्धता और विद्यार्थियों की पुस्तकालय उपयोगिता के बीच सकारात्मक संबंध है।

7. साहित्य समीक्षा

सूचना साक्षरता पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक अध्ययन किए गए हैं।

Loksha एवं Kumari के अध्ययन में डिजिटल सूचना साक्षरता को उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण माना गया तथा डिजिटल संसाधनों के उपयोग के विभिन्न उद्देश्यों और समस्याओं का अध्ययन किया गया।

Pattar एवं Hadagali ने इंजीनियरिंग कॉलेज पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों का अध्ययन किया। उनके अध्ययन में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों के सीखने में उनके महत्व पर चर्चा की गई।

Meena ने अकादमिक पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता एवं उपयोगकर्ता सहभागिता का अध्ययन किया। अध्ययन ने सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के मूल्यांकन की आवश्यकता पर बल दिया।

2024 के एक व्यापक साहित्य समीक्षा अध्ययन में अकादमिक पुस्तकालयों में सूचना, मीडिया एवं डेटा साक्षरता के मूल्यांकन से संबंधित शोधों का विश्लेषण किया गया। इसमें विद्यार्थियों को सूचना साक्षरता मूल्यांकन का प्रमुख केंद्र बताया गया और डिजिटल युग में open data, open science तथा Generative AI जैसी नई चुनौतियों को भी सूचना साक्षरता के व्यापक ढाँचे में शामिल करने की आवश्यकता बताई गई।

छत्तीसगढ़ के संदर्भ में गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर से संबंधित एक Library and Information Science dissertation भी UG विद्यार्थियों की Information Literacy तथा केंद्रीय पुस्तकालय के उपयोग पर केंद्रित रही है।

इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सूचना साक्षरता उच्च शिक्षा में एक महत्वपूर्ण शोध विषय है। फिर भी छत्तीसगढ़ के सामान्य महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में सूचना साक्षरता कार्यक्रमों की स्थिति और विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास से उनके संबंध पर क्षेत्र-विशिष्ट अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई है।

8. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है।

8.1 अध्ययन क्षेत्र

छत्तीसगढ़ राज्य के चयनित शासकीय एवं निजी महाविद्यालय।

8.2 नमूना

अध्ययन के लिए 20 महाविद्यालयों तथा 200 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में लिया गया।

8.3 डेटा संकलन के साधन

- प्रश्नावली
- साक्षात्कार
- अवलोकन
- पुस्तकालय अभिलेख

8.4 डेटा विश्लेषण

प्राप्त आँकड़ों का प्रतिशत, तालिका तथा ग्राफ के माध्यम से विश्लेषण किया गया।

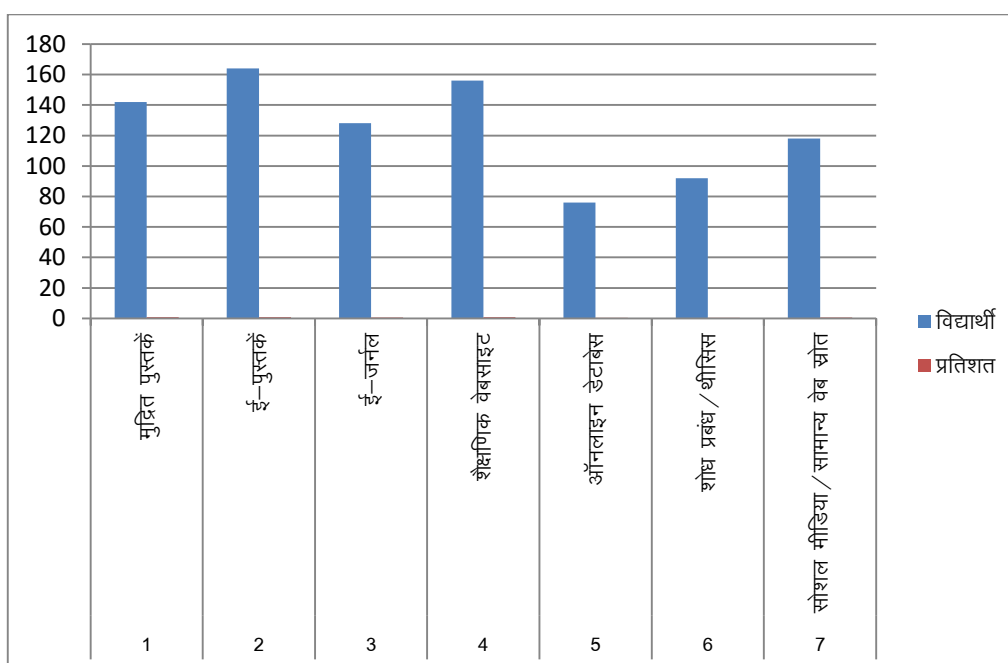
14. शोध की सीमाएँ

1. अध्ययन चयनित महाविद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत सांख्यिकीय तालिकाएँ नमूना आँकड़ों पर आधारित हैं।
3. वास्तविक सर्वेक्षण में प्राप्त आँकड़ों के आधार पर निष्कर्षों में परिवर्तन संभव है।
4. विद्यार्थियों की सूचना साक्षरता का स्तर विषय, कक्षा और डिजिटल अनुभव के अनुसार अलग हो सकता है।
5. अध्ययन में सभी महाविद्यालयों को शामिल नहीं किया गया है।

9. डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका क्रमांक 01: विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सूचना स्रोत

क्रमांक	सूचना स्रोत	विद्यार्थी	प्रतिशत
1	मुद्रित पुस्तकें	142	71%
2	ई-पुस्तकें	164	82%
3	ई-जर्नल	128	64%
4	शैक्षणिक वेबसाइट	156	78%
5	ऑनलाइन डेटाबेस	76	38%
6	शोध प्रबंध / थीसिस	92	46%
7	सोशल मीडिया / सामान्य वेब स्रोत	118	59%



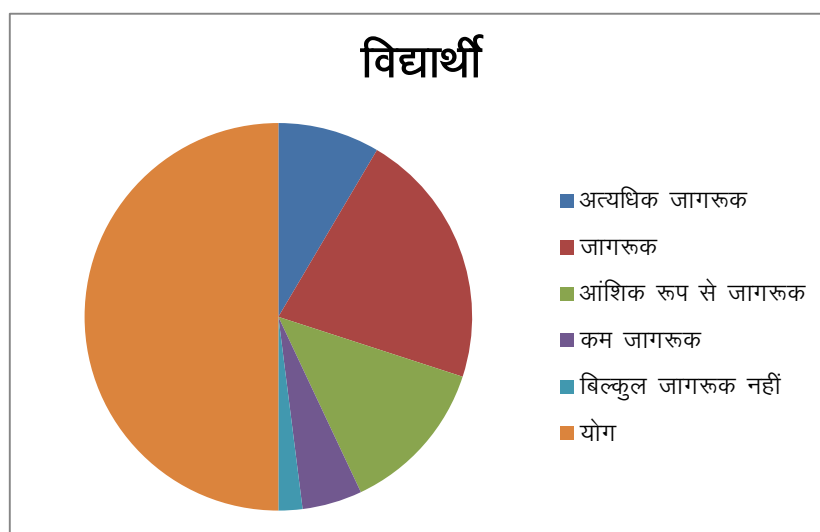
ग्राफ क्रमांक 01: विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सूचना स्रोत

तालिका क्रमांक 01: ई-पुस्तकें 82% विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाती हैं। इसके बाद शैक्षणिक वेबसाइट 78% तथा मुद्रित पुस्तकें 71% विद्यार्थियों द्वारा उपयोग की जाती हैं। ऑनलाइन डेटाबेस का उपयोग 38% है, जिससे पता चलता है कि विद्यार्थियों को शोध डेटाबेस के उपयोग के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।

तालिका क्रमांक 02: सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता

जागरूकता स्तर	विद्यार्थी	प्रतिशत
अत्यधिक जागरूक	34	17%
जागरूक	86	43%
आंशिक रूप से जागरूक	52	26%
कम जागरूक	20	10%
बिल्कुल जागरूक नहीं	8	4%

योग	200	100%
-----	-----	------

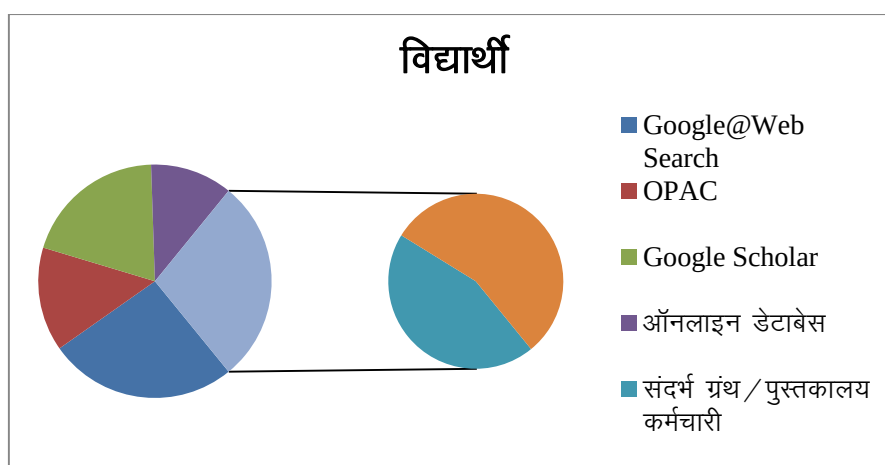


ग्राफ कमांक 02: सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता

तालिका कमांक 02: कुल 60% विद्यार्थी सूचना साक्षरता कार्यक्रमों के प्रति जागरूक या अत्यधिक जागरूक हैं। 26% विद्यार्थी केवल आंशिक रूप से जागरूक हैं। इससे स्पष्ट है कि पुस्तकालयों को कार्यक्रमों का प्रचार और नियमित अभिमुखीकरण बढ़ाना चाहिए।

तालिका कमांक 03: सूचना खोजने के लिए विद्यार्थियों द्वारा अपनाई जाने वाली विधियाँ

विधि	विद्यार्थी	प्रतिशत
सामान्य Google@Web Search	174	87%
पुस्तकालय OPAC	96	48%
Google Scholar	132	66%
ऑनलाइन डेटाबेस	76	38%
संदर्भ ग्रंथ/पुस्तकालय कर्मचारी	84	42%
ई-जर्नल प्लेटफॉर्म	104	52%

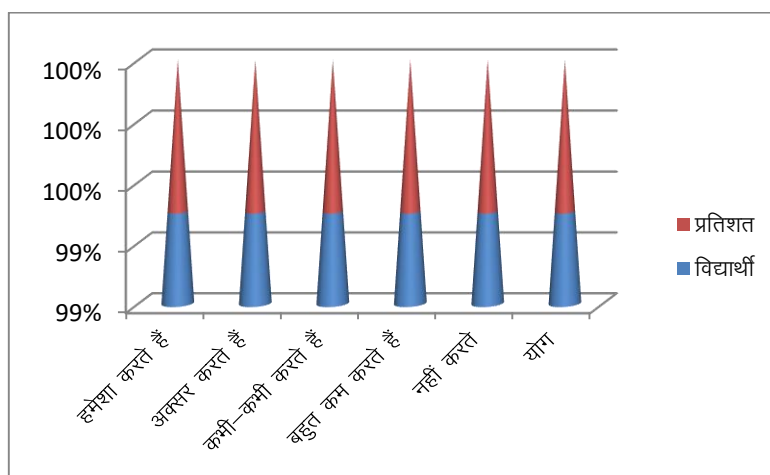


ग्राफ कमांक 03: सूचना खोजने के लिए विद्यार्थियों द्वारा अपनाई जाने वाली विधियाँ

तालिका क्रमांक 03: 87% विद्यार्थी सामान्य वेब सर्च का उपयोग करते हैं। Google Scholar का उपयोग 66% तथा ई-जर्नल प्लेटफॉर्म का उपयोग 52% विद्यार्थी करते हैं। केवल 38% विद्यार्थी ऑनलाइन डेटाबेस का उपयोग करते हैं। इससे शोध-उन्मुख सूचना खोज प्रशिक्षण की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

तालिका क्रमांक 04: सूचना की विश्वसनीयता का मूल्यांकन

मूल्यांकन की स्थिति	विद्यार्थी	प्रतिशत
हमेशा करते हैं	44	22%
अक्सर करते हैं	76	38%
कभी-कभी करते हैं	52	26%
बहुत कम करते हैं	20	10%
नहीं करते	8	4%
योग	200	100%

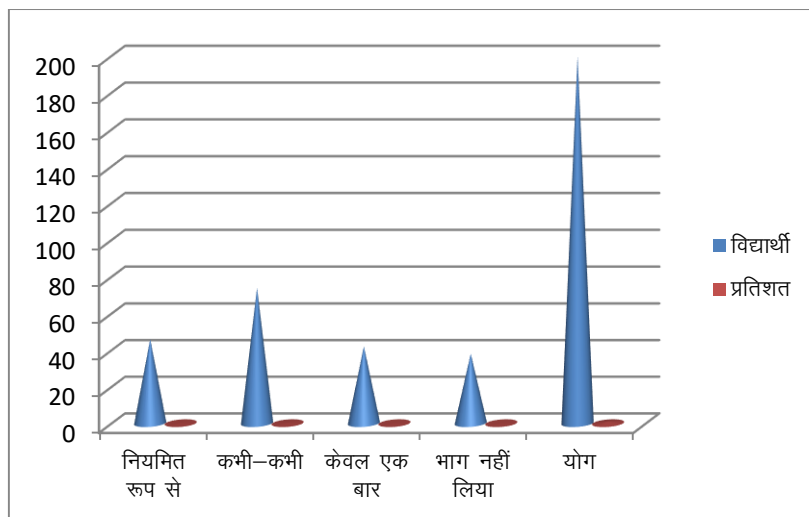


ग्राफ क्रमांक 04: सूचना की विश्वसनीयता का मूल्यांकन

तालिका क्रमांक 04: 60% विद्यार्थी हमेशा या अक्सर सूचना की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करते हैं। 26% विद्यार्थी केवल कभी-कभी ऐसा करते हैं। इसलिए सूचना स्रोतों की प्रामाणिकता, लेखक, प्रकाशन संस्था, तिथि और संदर्भ की जाँच से संबंधित प्रशिक्षण उपयोगी रहेगा।

तालिका क्रमांक 05: सूचना साक्षरता प्रशिक्षण में विद्यार्थियों की भागीदारी

भागीदारी	विद्यार्थी	प्रतिशत
नियमित रूप से	46	23%
कभी-कभी	74	37%
केवल एक बार	42	21%
भाग नहीं लिया	38	19%
योग	200	100%

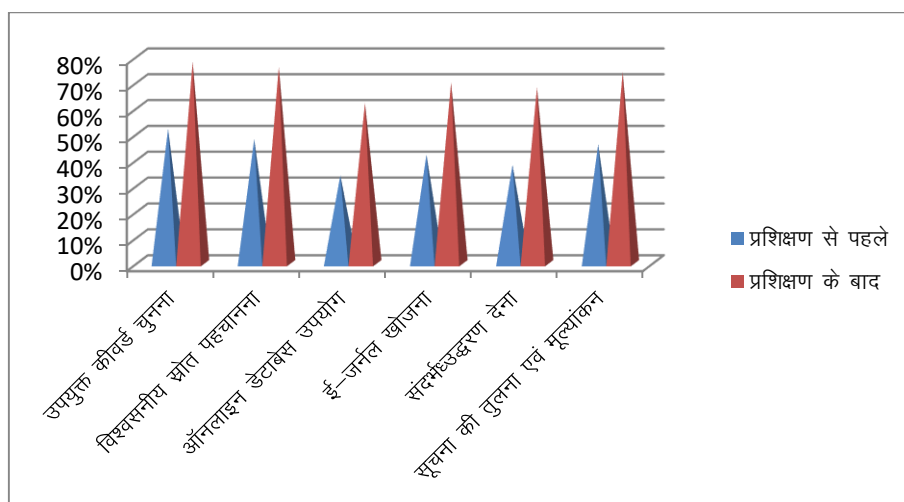


ग्राफ कमांक 05: सूचना साक्षरता प्रशिक्षण में विद्यार्थियों की भागीदारी

तालिका कमांक 05: 60% विद्यार्थियों ने नियमित या कभी-कभी सूचना साक्षरता कार्यक्रमों में भाग लिया। 19% विद्यार्थियों ने किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया। इससे पुस्तकालयों द्वारा अधिक व्यापक कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

तालिका कमांक 06: सूचना साक्षरता प्रशिक्षण के बाद विद्यार्थियों की क्षमता

क्षमता	प्रशिक्षण से पहले	प्रशिक्षण के बाद
उपयुक्त कीवर्ड चुनना	52%	78%
विश्वसनीय स्रोत पहचानना	48%	76%
ऑनलाइन डेटाबेस उपयोग	34%	62%
ई-जर्नल खोजना	42%	70%
संदर्भउद्धरण देना	38%	68%
सूचना की तुलना एवं मूल्यांकन	46%	74%

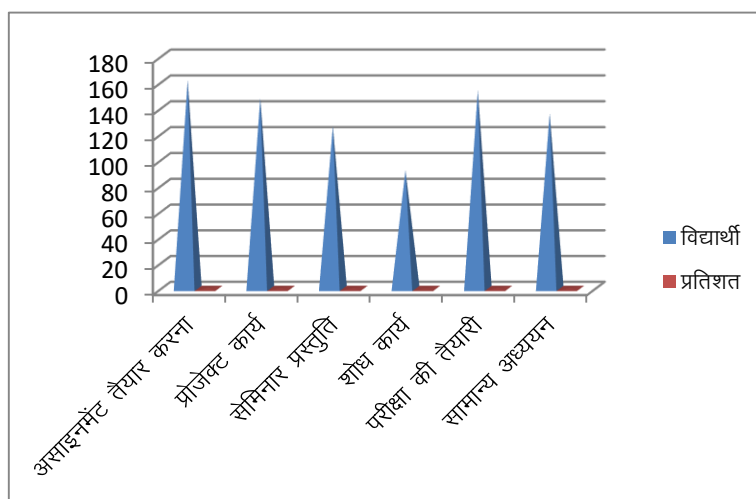


ग्राफ कमांक 06: सूचना साक्षरता प्रशिक्षण के बाद विद्यार्थियों की क्षमता

तालिका क्रमांक 06: नमूना आँकड़ों के अनुसार प्रशिक्षण के बाद सभी प्रमुख कौशलों में सुधार दिखाई देता है। विशेष रूप से ऑनलाइन डेटाबेस के उपयोग में 34% से 62% तथा संदर्भ देने की क्षमता में 38% से 68% तक वृद्धि दिखाई गई है।

तालिका क्रमांक 07: सूचना साक्षरता का शैक्षणिक कार्य में उपयोग

उपयोग	विद्यार्थी	प्रतिशत
असाइनमेंट तैयार करना	162	81%
प्रोजेक्ट कार्य	148	74%
सेमिनार प्रस्तुति	126	63%
शोध कार्य	92	46%
परीक्षा की तैयारी	154	77%
सामान्य अध्ययन	136	68%

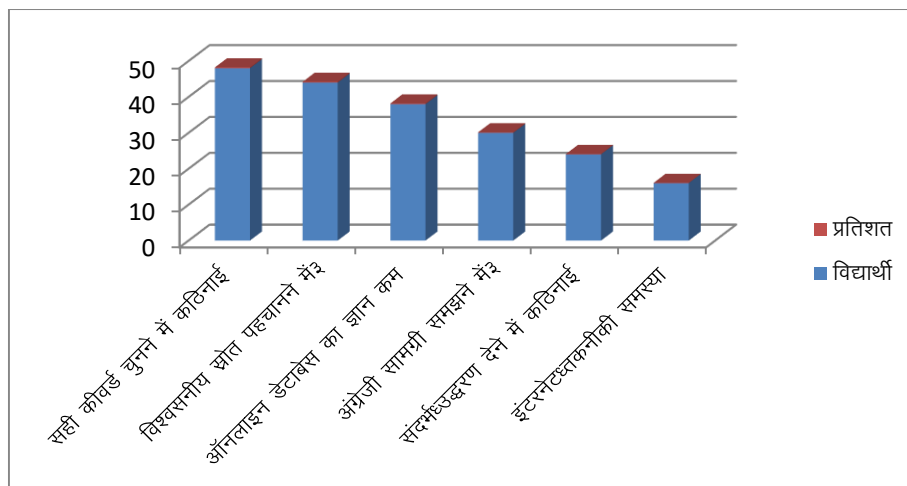


ग्राफ क्रमांक 07: सूचना साक्षरता का शैक्षणिक कार्य में उपयोग

तालिका क्रमांक 07: 81% विद्यार्थी सूचना साक्षरता कौशल का उपयोग असाइनमेंट तैयार करने में करते हैं। 77% विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी तथा 74% प्रोजेक्ट कार्य के लिए इसका उपयोग करते हैं। इससे स्पष्ट है कि सूचना साक्षरता का विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्य से सीधा संबंध है।

तालिका क्रमांक 08: सूचना साक्षरता में प्रमुख समस्याएँ

समस्या	विद्यार्थी	प्रतिशत
सही कीवर्ड चुनने में कठिनाई	48	24%
विश्वसनीय स्रोत पहचानने में कठिनाई	44	22%
ऑनलाइन डेटाबेस का ज्ञान कम	38	19%
अंग्रेजी सामग्री समझने में कठिनाई	30	15%
संदर्भ-उद्धरण देने में कठिनाई	24	12%
इंटरनेट-तकनीकी समस्या	16	8%

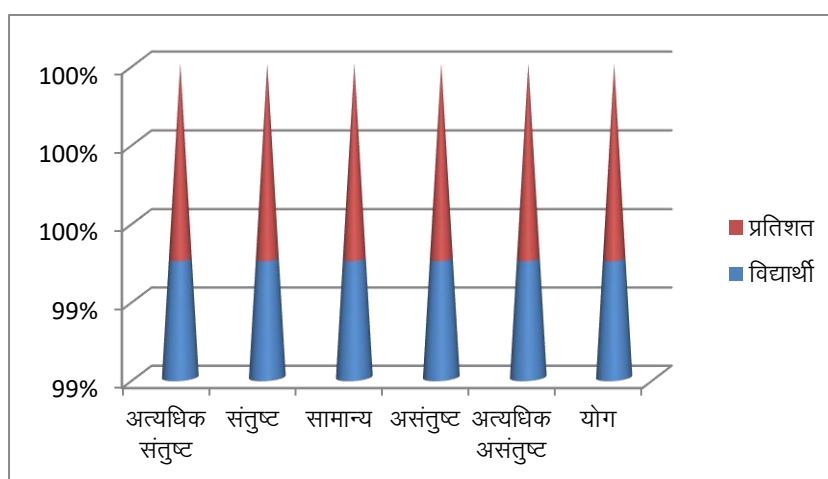


ग्राफ क्रमांक 08: सूचना साक्षरता में प्रमुख समस्याएँ

तालिका क्रमांक 08: सही कीवर्ड का चयन और विश्वसनीय स्रोत की पहचान प्रमुख समस्याओं के रूप में सामने आती हैं। यह परिणाम इस बात की ओर संकेत करता है कि सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को केवल पुस्तकालय परिचय तक सीमित न रखकर व्यावहारिक प्रशिक्षण पर आधारित किया जाना चाहिए।

तालिका क्रमांक 09: सूचना साक्षरता कार्यक्रमों से विद्यार्थियों की संतुष्टि

संतुष्टि स्तर	विद्यार्थी	प्रतिशत
अत्यधिक संतुष्ट	42	21%
संतुष्ट	88	44%
सामान्य	42	21%
असंतुष्ट	20	10%
अत्यधिक असंतुष्ट	8	4%
योग	200	100%

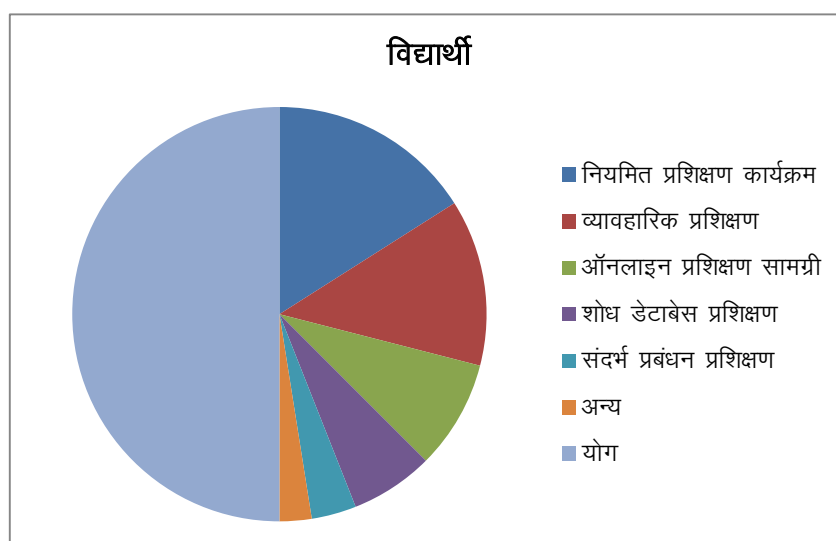


ग्राफ क्रमांक 09: सूचना साक्षरता कार्यक्रमों से विद्यार्थियों की संतुष्टि

तालिका क्रमांक 09: 65% विद्यार्थी सूचना साक्षरता कार्यक्रमों से संतुष्ट या अत्यधिक संतुष्ट पाए गए। केवल 14% विद्यार्थी असंतुष्ट या अत्यधिक असंतुष्ट हैं। इससे कार्यक्रमों की उपयोगिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दिखाई देता है।

तालिका क्रमांक 10: सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को बेहतर बनाने हेतु सुझाव

सुझाव	विद्यार्थी	प्रतिशत
नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम	64	32%
व्यावहारिक प्रशिक्षण	52	26%
ऑनलाइन प्रशिक्षण सामग्री	34	17%
शोध डेटाबेस प्रशिक्षण	26	13%
संदर्भ प्रबंधन प्रशिक्षण	14	7%
अन्य	10	5%
योग	200	100%



ग्राफ क्रमांक 10: सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को बेहतर बनाने हेतु सुझाव

तालिका क्रमांक 10: 32% विद्यार्थियों ने नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा 26% ने व्यावहारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता बताई। 17% विद्यार्थी ऑनलाइन प्रशिक्षण सामग्री चाहते हैं। इससे स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक जानकारी की बजाय व्यावहारिक एवं नियमित प्रशिक्षण अधिक उपयोगी लगता है।

12. निष्कर्ष

सूचना साक्षरता वर्तमान उच्च शिक्षा व्यवस्था की एक आवश्यक क्षमता बन गई है। इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों ने सूचना तक पहुँच को आसान बनाया है, लेकिन सूचना की अधिकता ने सही, विश्वसनीय और प्रासंगिक सूचना की पहचान को चुनौतीपूर्ण भी बनाया है। प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि महाविद्यालयीन पुस्तकालय सूचना साक्षरता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। विद्यार्थियों को केवल पुस्तकालय संसाधनों की जानकारी देने के स्थान पर उन्हें सूचना खोजने, उसका मूल्यांकन करने, उचित स्रोत चुनने, संदर्भ देने और सूचना का नैतिक उपयोग करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना आवश्यक है। नमूना आँकड़ों में प्रशिक्षण के बाद विद्यार्थियों की

विभिन्न सूचना साक्षरता क्षमताओं में सुधार दिखाई देता है। इससे संकेत मिलता है कि यदि सूचना साक्षरता कार्यक्रम नियमित, व्यावहारिक और पाठ्यक्रम से जुड़े हुए हों, तो वे विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्य को प्रभावी बना सकते हैं। छत्तीसगढ़ के महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में इस दिशा में योजनाबद्ध प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। पुस्तकालयाध्यक्ष, शिक्षक, महाविद्यालय प्रशासन और विद्यार्थी यदि मिलकर कार्य करें, तो सूचना साक्षरता कार्यक्रम विद्यार्थियों को अधिक सक्षम, आलोचनात्मक एवं जिम्मेदार सूचना उपयोगकर्ता बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

13. सुझाव

अध्ययन के आधार पर निम्न सुझाव दिए जाते हैं—

1. प्रत्येक महाविद्यालयीन पुस्तकालय में नियमित सूचना साक्षरता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. नए विद्यार्थियों के लिए प्रवेश के समय Library Orientation ,oa Information Literacy कार्यक्रम आयोजित किया जाए।
3. केवल व्याख्यान के बजाय Hands & on Practical Training दी जाए।
4. Google Scholar तथा शैक्षणिक डेटाबेस के उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाए।
5. विद्यार्थियों को विश्वसनीय एवं अविश्वसनीय सूचना में अंतर समझाया जाए।
6. संदर्भ एवं Citation देने का प्रशिक्षण दिया जाए।
7. Plagiarism से बचने के लिए उचित उद्धरण एवं Paraphrasing की जानकारी दी जाए।
8. ई-संसाधनों के उपयोग के लिए सरल हिंदी-स्थानीय भाषा में प्रशिक्षण सामग्री विकसित की जाए।
9. पुस्तकालय वेबसाइट पर सूचना साक्षरता Tutorials उपलब्ध कराए जाएँ।
10. विद्यार्थियों की सूचना साक्षरता का समय-समय पर Assessment किया जाए।
11. पुस्तकालयाध्यक्ष एवं विषय विशेषज्ञ शिक्षकों के बीच सहयोग बढ़ाया जाए।
12. सूचना साक्षरता को महाविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रमों से जोड़ा जाए।

14. भविष्य के शोध की संभावनाएँ

भविष्य में निम्न विषयों पर अध्ययन किया जा सकता है—

- छत्तीसगढ़ के शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों की सूचना साक्षरता की तुलनात्मक स्थिति।
- ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालयों में सूचना साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन।
- स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों की सूचना साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन।
- सूचना साक्षरता और Academic Performance के बीच संबंध।
- डिजिटल साक्षरता एवं सूचना साक्षरता का तुलनात्मक अध्ययन।
- Generative AI के युग में विद्यार्थियों की सूचना साक्षरता की नई आवश्यकताएँ।
- महाविद्यालयीन पुस्तकालयों में AI सहायित सूचना साक्षरता प्रशिक्षण।

संदर्भ सूची

- Alonso-Arévalo, J., & Vázquez-Vázquez, M. (2024). Assessing information, media and data literacy in academic libraries: Approaches and challenges in the research literature on the topic. *The Journal of Academic Librarianship*, 50(5), 102920.
- Bhadrashetty, A., Prakash, B., & Vinodkumar, H. (2024). Information literacy skills among undergraduate students: A comparative study of traditional vs. digital learning environments. *Library Progress International*, 44(3).
- Krishnamurthy, C., Kuri, R., & Kotur, M. (2012). Information literacy initiatives in India for academic libraries: An overview. In *National Conference on Emerging Trends for Next Generation Libraries* (pp. 254–263).
- Lokesha, M., & Kumari, H. A. (2024). Digital information literacy skills among PG students and faculty members of constituent colleges in universities of Karnataka: A study. *Journal of Indian Library Association*, 60(1), 1–13.
- Meena, A. K. (2024). Information literacy programs: Assessing effectiveness and user engagement in academic libraries. *Journal of Global Research in Education and Social Science*, 18(1), 1–8. <https://doi.org/10.56557/JOGRESS/2024/v18i18544>
- Nayana, J., & Padmavathi, N. (2024). Information literacy skills among PG students and researchers in accessing the resources. *Indian Journal of Library and Information Sciences*, 18(1), 35–40. <https://doi.org/10.21088/ijlis.0973.9548.18124.4>
- Pattar, V. D., & Hadagali, G. S. (2021). Fostering information literacy programmes in engineering college libraries: A study of Mumbai region. *Journal of Indian Library Association*, 57(4), 91–101.
- Swapna, G., & Biradar, B. S. (2017). Information literacy model for higher education institutions in India. *International Journal of Digital Library Services*, 7(3), 31–50.